



जंगल सेक्स : कामुकता की इन्तेहा-12

“ इस जंगल सेक्स कहानी में पढ़ें कि कैसे मेरे यार ने मुझे पहाड़ी जंगल में लेजाकर चोदा. हम एक शादी के पंडाल में थे. उसने मेरी गांड में वाइब्रेटर घुसा रखा था, मेरी फुट्टी में आग लगी थी. ... ”

Story By: (rupinderkaur)

Posted: Sunday, December 16th, 2018

Categories: [हिंदी सेक्स स्टोरी](#)

Online version: [जंगल सेक्स : कामुकता की इन्तेहा-12](#)

जंगल सेक्स : कामुकता की इन्तेहा-12

मैं जट्टी हूँ तो मैंने खुल कर ढिल्लों के बराबर पेग लगाए। आधे पौने घंटे बाद दारू ने अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया और घंटा पहले ज़बरदस्त तरीके से चुदी हुई मैं अब अपने जिस्म का कंट्रोल खोने लगी। दूसरा ढिल्लों ने वाइब्रेटर की गति पूरी तेज़ कर दी। चूत फिर लौड़े के लिए तड़प उठी।

तभी मैंने लोगों के परवाह न करते हुए ढिल्लों को जफ़्फ़ी डाल ली और उसके कान में कहा- फुद्दी आग बन गयी है, ठोक दे यार जल्दी प्लीज। बर्दाश्त नहीं हो रहा!

जब मैंने ढिल्लों से यह बात कही तो वो खुश होकर हँसने लगा और उसने मुझसे कहा- बस यही सुनने के लिए तो वाइब्रेटर लाया था, थोड़ा और तड़प ले मेरी जान!

उसकी यह बात सुनकर मुझे बहुत गुस्सा आया। मेरी फुद्दी रिसने लगी थी और ऊपर से पूरी ठंड थी। अपने ऊपर काबू न होता हुआ देख मैंने ढिल्लों से कहा- अच्छा फिर वाइब्रेटर तो बंद कर दे भेन चो... गांड में तबाही मचा रखी है, ऊपर से पी भी काफी ली है मैंने! ढिल्लों फिर हँसने लगा और उसने मुझसे सिर्फ इतना कहा- अब साली ... तुझे यहां पंडाल में ठोक दूँ, रुक जा अभी।

मैं बस मुंह बना के रह गयी और उसी तरह उसके साथ घूमने फिरने लगी। मेरी चाल में वाइब्रेटर और दारू की वजह से इतना फर्क आ गया था कि लोग मुझे मुड़ मुड़ कर देखने लगे कि माजरा क्या है। लेकिन उन्हें क्या पता था कि जट्टी की अनचुदी गांड में 8" का मोटा वाइब्रेटर फंसा हुआ है और बहुत ज़ोर से वाइब्रेट भी कर रहा है।

वैसे वाइब्रेटर तो गांड में चल रहा था लेकिन उसकी सनसनी मेरी फुद्दी में फैल गयी थी। जी चाहता था कि अब कोई भी चीज़ मेरी फुद्दी में घुस जाए चाहे वो कोई लकड़ी का डंडा ही क्यों न हो। जब फुद्दी ज़ोर से हाहाकार मचाने लगी तो मुझसे मेरे जिस्म का पूरा काबू छूट गया और मेरी जिस्म की सारी वासना फुद्दी में आ गयी। जल्दबाज़ी में मैंने ढिल्लों से कहा- मुझे बाथरूम जाना है। लेकिन ढिल्लों सिरें का कमीना था वो मेरी बात अच्छी तरह समझ गया और कस के मेरी बाँह पकड़ के चलने लगा।

उसकी इस हरकत के बाद मैं उसके सामने गिड़गिड़ाने लगी- ढिल्लों, आग लग गयी है, कंट्रोल नहीं हो रहा, मैं तेरे पैर पड़ती हूँ, ठोक दे यार प्लीज़, कभी तेरा कहना नहीं वापस करूँगी।

यह पहली बार था कि मैं किसी के सामने फुद्दी देने के लिए इस तरह गिड़गिड़ाई थी, वरना इस तरह कई बार मैं मज़े लेने के लिए दूसरों की मिन्नतें अक्सर करवाती हूँ।

खैर मेरी बात सुनकर ढिल्लों समझ गया कि मामला अब वाकयी संजीदा हो गया है। बेगानी शादी में मैं कोई उल्टी सीधी हरकत न कर बैठूँ इसीलिए वो मुझे तेज़ी से चलाते हुए गाड़ी तक ले गया और अपनी गाड़ी के पीछे बिठा दिया और खुद जल्दी से ड्राइव करने लगा। दरअसल अब हुआ यूँ कि बैठने के कारण जो वाइब्रेटर पहले 1-2 इंच बाहर था, जड़ तक मेरी गांड में टूसा गया। जब मैं थोड़ा सा भी इधर उधर हिलती तो वो गांड की अंदरूनी दीवारों से ज़ोर से टकराता जिससे मुझे हल्का सा दर्द होता। इसीलिए मैं टाँगें भींच के जैसे तैसे बैठी रही।

ढिल्लों ने गाड़ी को तेज़ी से चलाकर पहाड़ों में एक सुनसान मोड़ पर रोक ली क्योंकि रास्ते में उसे कोई होटल नज़र नहीं आया शायद। पर बात यह निकली कि इस बार वो मुझे खुले में चोदना चाहता था क्योंकि उस रिसोर्ट में उसका एक कमरा बुक था।

आसपास कोई कमरा वगैरा न देख कर मैं घबरा गई। पहले ही मैं उसके दोस्तों के सामने एक बार बेइज्जत हो चुकी थी और इस बार मैं किसी अनजान व्यक्ति के सामने उस तरह नहीं आना चाहती थी।

शाम का वक़्त था और रोशनी बहुत कम हो चुकी थी। गाड़ी रोक कर ढिल्लों ने मुझे कहा- यार, मेरी एक बहुत बड़ी तमन्ना है कि तेरे जैसी औरत को खुले में चोदूं। आज ये तमन्ना पूरी कर दे जानेमन!

मैं उसकी मंशा पहले से ही जानती थी इसीलिए मैंने उसे कड़क लहजे में जवाब दिया- देख ढिल्लों, पहले ही तूने मेरी एक बार बेइज्जती कर दी है, मैं इस तरह खुले जंगल में सेक्स करने, चुदने की बिल्कुल भी शौकीन नहीं हूँ, किसी कमरे में ले जाना है तो चल, नहीं तो निकाल ये डंडा मेरी गांड से मुझे मेरी सहेली के पास छोड़ आ।

मुझे इस तरह गुस्से में देख कर वो पागल हो गया और बाहर निकल के पीछे का दरवाज़ा खोला और एक झटके में ही मैं उसके कंधों पर थी। आस पास किसी को न देख कर ढिल्लों मुझे उठा कर खाई में उतरने लगा। मैं चाहकर भी कुछ नहीं कर सकती थी।

मैंने उसकी बार बार मिन्नतें कीं लेकिन वो नहीं माना और 15-20 मिनट चलने के बाद नीचे जंगल में घने दरख्तों के बीच एक बहुत छोटा सा मैदान था। ढिल्लों को वो जगह जच गयी क्योंकि चारों तरफ कोई भी नहीं था और न ही उन घने दरख्तों में से कोई देख सकता था। उसने मुझे घास पर लेटा दिया और मुझे बुरी तरह चूमने चाटने लगा।

मैं बहुत डरी हुई थी लेकिन मेरी फुट्टी में आग भी शिखर तक पहुंच चुकी थी। बीच में मैंने उसे रोक कर कहा- यह जंगल सेक्स करने की जगह है? अगर कोई आ गया तो मारे जाएंगे ढिल्लों, बेवकूफी न कर, गाड़ी में लेजाकर ठोक ले।

ढिल्लों ने मुझे चूमते हुए कहा- जानेमन, ये रिवाल्वर मैंने गांड में लेने के लिए नहीं रखा, साला अगर कोई हरामी आ भी गया तो बस मेरे एक हवाई फायर का खेल है, तू डर मत, मेरा नाम ढिल्लों है।

उसकी इस तकरीर से पूरी तरह संतुष्ट हो गयी और जंगल सेक्स का मज़ा लेने लग गयी।

बेहद ठंड थी। दिल्ली ने मेरी फुद्दी में एक चप्पा चढ़ा के धीरे धीरे सारे कपड़े मेरे जिस्म से अलग कर दिए। अब मैं सिर्फ ऊंची एड़ी के सैंडल और अपने सोने के गहनों में ही थी। बाकी अल्फ नंगी उसके नीचे पड़ी थी। 15-20 मिनट के बाद पूरा अंधेरा छा गया और मैं पूरी तरह से बेफिक्र थी। दिल्ली ने मुझे इस बार अपने लौड़े के लिए इतना तड़पा दिया था कि मैंने खुद अपनी सारी ताकत इकट्ठी करके उसका लौड़ा पकड़ा और अपनी फुद्दी लगा कर नीचे से एक करारा झटका मारा। आधा लौड़ा बेपरवाही से मेरी फुद्दी में जाकर फंस गया, जिससे मुझे इतना चैन मिला कि मैं बयान नहीं कर सकती।

दिल्ली ने मेरी हरकत को देखकर अपनी कमर ऊंची की, लौड़ा पूरी तरह से बाहर निकाला, मेरी अच्छी तरह से तह लगाई और एक लंबा, तीक्ष्ण शॉट मारा और लौड़ा मेरी धुन्नी तक पहुंचा दिया। उसके एक वार से ही मेरी फुद्दी ने बूम बूम करके पानी छोड़ दिया। मैं धन्य हो गयी थी। पिछले एक घंटे से मैं झड़ने के लिए तड़प रही थी और ये तो एक लंबा, काला और मोटा लौड़ा था जो मेरी धुन्नी तक जा पहुंचा था।

मेरे मुंह से बहुत जोर से 'हाय ... ओये ...' निकला और मैंने उसकी पीठ में अपने नाखून गड़ा दिए और टाँगें जितनी मैं ऊपर कर सकती थी, कर लीं। एक बार फिर दिल्ली ने अपनी तूफानी चुदाई शुरू कर दी। मैं दिल्ली का लौड़ा लेने के लिए इतनी मजबूर हो चुकी थी कि घने जंगल में सर्दियों की रात में बेफिक्र हो कर नंगी चुद रही थी। जब दिल्ली तूफानी रफ्तार से पूरा लौड़ा बाहर निकाल कर जड़ तक अंदर पेल देता तो फुद्दी से 'पुच्च' की तेज़ आवाज़ आती और घने जंगल को चीरती हुई घाटी में गूँज जाती।

दूसरा जो मैंने आपको पहले भी बताया है कि मैं एक भरे जिस्म वाली औरत हूँ, जिसके कारण मेरी जांघें और गांड गैरमामूली तौर पर बड़ी बड़ी हैं, जब दूसरा दिल्ली की जांघें भी खूब भरी हुई थीं, और जब दिल्ली घस्सा मारता तो मेरा तरबूजी पिछवाड़ा और उसकी

जांघें टकरा के बहुत ऊंची 'पटक' की आवाज़ पैदा कर रही थी, जो मेरी फुद्दी की 'पुच्च' की आवाज़ से मेल खाकर चुदाई को एक जबरदस्त रंगत दे रही थी।

मेरी गांड में एक बड़ा वाइब्रेटर चालू था और मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं दो मर्दों से चुद रही हूँ। खैर मैं उसकी इस चुदाई से इतनी मस्खमूर हो गयी कि मैंने सब कुछ भूल कर अपनी टाँगों उसकी पीठ के गिर्द नागिन की तरह लपेट दीं और उसका मुंह अपने दोनों हाथों में लेकर उसकी आँखों में आँखें डाल लीं और बिना पलकें झपकाए उसको तकती रही।

मेरे पूर्ण समर्पण और मुझे मोर्चे पर इस तरह डटे हुए देख कर ढिल्लों ने अपनी पूरी ताकत से अपना हलब्बी लौड़ा बाहर निकाल कर मेरी फुद्दी में ठोकने लगा। ये वो इतना जोर लगा कर करने लगा था कि उस जैसे घोड़े की भी सांस फूल गयी थी। आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि पौने फुट लंबा और 4 इंच मोटा काला हब्शी लौड़ा मेरी तरबतर फुद्दी में इस गति से अंदर बाहर होकर उसका क्या हाल कर रहा होगा।

मेरी फुद्दी का बाहरी छल्ला जो उसके लौड़े पर इलास्टिक की तरह कसा हुआ था, हर गुज़रते सैकंड के साथ तीन चार इंच अंदर धंस रहा था और जब वो अपना लौड़ा बाहर निकालता तो ऐसा लगता कि फुद्दी भी उसके साथ बाहर आ रही है लेकिन वो छल्ला ही था जो उसके लौड़े पर कसे होने के कारण 3-4 इंच बाहर को आ जाता था।

दोस्तो, उस सर्दी की शाम में भी हम दोनों इस तूफानी चुदाई से पसीने से तरबतर थे। उसका मुझे पता नहीं, लेकिन मुझे चुदते वक़्त किसी और चीज़ की होश नहीं थी, शायद इसे ही जन्नत कहते हैं।

खैर मुझे चोदते चोदते एकदम ढिल्लों रुका और चलता हुआ वाइब्रेटर एकदम मेरी गांड से बाहर खींच लिया। जब उसने ऐसा किया तो मेरी गांड का मुंह हैरानी से खुला का खुला ही रह गया और लगभग 15-20 सेकंड तक खुला रहा।

मैंने फौरन ही बिलबिला कर ढिल्लों से कहा- डाले रखो इसे प्लीज, अच्छा लग रहा था बहुत!

लेकिन ढिल्लों ने कोई जवाब न दिया और झट से अपना लौड़ा मेरी फुद्दी में डाल कर फिर उसी गति से चुदाई करने लगा।

मुझे मज़ा तो अब भी आ रहा था लेकिन कुछ कुछ कमी सी लग रही थी। मैं ढिल्लों की इस चाल को समझ गई थी। उसने पिछले दो घंटों ने लगातार वाइब्रेटर मेरी गांड में रख कर और उसी तरह उसे बगैर बाहर निकाले मुझे चोद कर मुझे एक और हवस भरी आदत लगा दी थी। क्योंकि मुझे अब पहले जैसा ही स्वाद चाहिए था, इसीलिए मैंने ढिल्लों से उसकी मन की बात कह ही दी जो वो मेरे मुंह से सुनना चाहता था- ढिल्लों, किसी तरह काले को भी तैयार कर।

ढिल्लों यह सुनकर बहुत खुश हुआ और धीरे धीरे मुझे चोदते हुए कहने लगा- बस यही मुराद थी मेरी कि तेरे जैसी घोड़ी पर दो-दो सांड चढ़ें, मैंने ये तजुर्बा और औरतों पर भी किया है लेकिन तू पहली और जो मानी है, देखना रूपिन्द्र ... अब तुझे वो जन्नतें दिखाऊंगा कि याद रखेगी। लेकिन इसी तरह मोर्चे पे डटी रहना, चीखें तो निकलेंगी तेरी, साले का मेरे से भी बड़ा है।

यह सुनकर मेरे होश उड़ गए। मैं सोच रही थी कि मैंने हवस और दारू के नशे में ये बात कहकर कहीं गलती तो नहीं कर ली थी। लेकिन अब तीर कमान से निकल चुका था। ये सोचकर मैंने दूर की न सोचते हुए ढिल्लों के नीचे से पूरा जोर लगा कर हिली और वाइब्रेटर जो पास ही पड़ा हुआ था, उठाकर जलदी से जैसे तैसे अपनी गांड में टूंस लिया।

ढिल्लों ने यह देखकर उसका स्विच फिर चालू कर दिया और उसी तरह तेज़ी से चोदने लगा मुझे। अगली 15-20 मिनट की जबरदस्त चुदाई में मैं दो बार झड़ गयी थी और दोस्तो ... झड़ती तो आपको पता ही है कि मैं कैसे हूँ। दोनों बार जबरदस्त पानी निकला था और मैं

बुरी तरह काँपी भी। कोई और आवाज़ें नहीं, अब मेरे मुँह से बहुत ऊंची 'हूम्म... हूँ ... हम्म ... हूँ ...' ही निकल रहा था।

अगले पांच मिनट के बाद एक बार फिर मुझे झड़ने के लिए तैयार होते देख दिल्ली ने बहुत तेज़ चुदाई शुरू कर दी और इस बार हम दोनों ऊंची ऊंची 'हो ... हह ... हो ...' करते हुए झड़े। सारा माल एक बार दिल्ली ने मेरी गहरी फुट्टी में इतना अंदर तक भर दिया कि एक बून्द भी बाहर नहीं निकली।

यह कमाल की बात थी क्योंकि अब तक मैं जितने भी 13-14 मर्दों से चुदी हूँ, सभी का लगभग सारा वीरज बाहर आ जाता था लेकिन दिल्ली के बारे में मजाल कि एक तुपका^^ भी बाहर आ जाए।

खैर एक और लबालब चुदाई के बाद अब मुझमें ऊपर चढ़ने की हिम्मत नहीं थी और दूसरा वाइब्रेटर भी दिल्ली ने बाहर नहीं निकालने दिया था। दिल्ली ने मेरी हालत देख कर मुझे एक लोई में लपेटा और और अपने कन्धे पर उठा कर मुझे गाड़ी में लाकर बैठा दिया। अपने लहंगा चोली मैंने चलती गाड़ी में ही पहने और अपना बैग उठा कर अपना मेकअप भी कर लिया।

जंगल में सेक्स की कहानी आपको कैसी लगी ?

मेरी स्टोरी चलती रहेगी. इस भाग में हुई देरी के लिए माफी मांगती है आप सबकी जान रूपिंदर कौर !

rupkaur050@gmail.com

^नशे में चूर

^^बूंद, अंश

Other stories you may be interested in

नवम्बर 2018 की बेस्ट लोकप्रिय कहानियाँ

प्रिय अन्तर्वासना पाठको नवम्बर 2018 प्रकाशित हिंदी सेक्स स्टोरीज में से पाठकों की पसंद की पांच बेस्ट सेक्स कहानियाँ आपके समक्ष प्रस्तुत हैं... मम्मी से बदला लिया सौतेले बाप से चुदकर “आहऽऽऽ... ओह... आहऽऽऽ... फक...फक मी हार्ड बेबी... डीप... डीप [...]

[Full Story >>>](#)

मेरी रानी की कहानी-3

हम उसके पी जी पंहुचे। रूम में घुसते ही उसने मुझे जोर से हग किया। फिर एक दूसरे को खूब सारी चुम्बियाँ की। थोड़ी देर बाद हम फ्रेश हुए। वो एक लॉज टाइप पी जी था। शहर के पॉश इलाके [...]

[Full Story >>>](#)

दोस्त की बहन की चुदाने की चाहत

दोस्तो, मेरा नाम रवि है। जिसने मेरी पिछली कहानी मेरी पहली चुदाई चाचा की लड़की के साथ पढ़ी होगी, वो मेरे बारे में सब जानता होगा। उसके बाद मैं जब भी चाचा के घर जाता तो पहले देख लेता कि [...]

[Full Story >>>](#)

वासना का मस्त खेल-1

नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम महेश कुमार है। अभी तक आपने मेरी कहानियों में मेरे बारे में जान ही लिया होगा। सबसे पहले तो मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मेरी सभी कहानियाँ काल्पनिक हैं, जिनका किसी के साथ कोई भी [...]

[Full Story >>>](#)

कॉलेज में मिला टीचर का बड़ा लंड

दोस्तो, मेरा नाम रोहन है और काफ़ी टाइम से मैं सेक्स कहानियाँ पढ़ता आ रहा हूँ। इन सेक्स कहानियों को पढ़ने में मुझे बहुत मज़ा आता है। मेरी उम्र अब 22 साल की हो चुकी है, औसत दुबला सा शरीर [...]

[Full Story >>>](#)

